should not shed crocodile tears or, should not say, for the records sake, "We welcome Bharat Ratna being given to P.V. Narasimha Rao ji, to Chaudhary Charan Singh ji and so on. They have proven when they were alive how torturous their lives were, how they tortured them. All that is very clear, and it will go on the records of the Parliament as to how, when they were alive, they tortured them, insulted them, and now, when a different party, when Prime Minister Modi, gives them Bharat Ratna, they are not even able to gulp the fact. Thank you very much.

OBSERVATIONS BY THE CHAIR - *Contd.*

श्री सभापतिः माननीय सदस्यगण, आज का दिन मेरे लिए अत्यंत पीड़ा का रहा है। मैं आपसे और मन से संरक्षण चाहता हूं। मर्यादित आचरण में रहना, ऐसे पल आते हैं, मुश्किल हो जाता है। पूर्ण सद्भाव के साथ सदन की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए, दुखी और आहत मन से मैं आपके समक्ष चिंतन का एक विषय रखता हूं। यह सदन पूरे देश का प्रतीक है। इस सदन में जो भी आचरण होता है, उसका चिंतन होता है, अध्ययन होता है, लोगों के मन में प्रसन्नता होती है और लोगों का मन दुखी भी होता है। ईमानदारी के प्रतीक, उत्कर्ष आचरण के धनी, किसान और गरीब के हितकारी भारत के पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' देना, स्वाभाविक रूप से सभी के लिए एक उत्सव का विषय होना चाहिए था। बाकी चार महानुभावों को दिया, यह भी अत्यंत उत्सव का विषय होना चाहिए था। न समय को हम देख सकते हैं, न यह कह सकते हैं कि क्यों दिया। मैं यह भी आपके सामने कहना चाहता हूं कि आज दिन भर में बहुत से लोगों ने मुझे सूचित भी किया है। इस सदन की गरिमा का आहत होना और मेरा इस आसन पर विराजमान होना, आज मेरे लिए दुखदायी रहा। मैं मानकर चलता हूं कि इस सदन का हर सदस्य भारत के इस महान सपूत को जो भारत रत्न दिया गया, उस पर गर्व महसूस करता है। उनके पोते को, उनके लिखित अनुरोध पर सदन में कुछ समय देना स्वाभाविक था। चौधरी चरण सिंह किसी परिवार तक सीमित नहीं हैं। चौधरी चरण सिंह अपने उस परिवार तक भी सीमित नहीं हैं, वे पूरे देश के थे। जब यह मुद्दा उठा और जो आचरण मैंने और आप सब ने देखा, वह अप्रत्याशित था, अपमानजनक था, पीड़ादायक था, हमारी गरिमा के विपरीत था। कुछ लोगों का आचरण इतना छोटा था कि मैं शर्मसार हो गया। मेरे मन में कई विचार आए और मेरे मन में एक विचार तुरंत पद त्याग का भी आया। ...(**व्यवधान**)... मैं बताता हूं, कृषक पुत्र होने के नाते ...(**व्यवधान**)... नहीं, सेंसिटिव नहीं ...(**व्यवधान**)... केशव जी, प्लीज़ ...(**व्यवधान**)...केशव जी, मैं सेंसिटिव नहीं हूं। मैंने जीवन में कभी भी, आप मुझसे कई बार मिल चुके हैं और आपकी हर रीज़नेबल बात को मैंने देखा है। फिर मुझे बताया गया कि मैं इस पद पर पदासीन नहीं हूं, मैं इस पद पर पदासीन हूं by virtue of being the Vice-President of the country; I am *ex officio* Chairman, उस पद की वजह से मैं यहां हूं। मैं कह सकता हूं कि मेरे जीवन में बहुत कठिन पल आए हैं। मैंने अपने जवान बेटे को खोया है, लोगों ने सहानुभूति दी है, पर आज की पीड़ा, जब

जयंत चौधरी बोल रहे थे और जयराम रमेश क्या कह रहे थे, मैंने सुना है, मेरे कानों ने सुना है कि जाओ जहां जाना है। श्मशान घाट के ऊपर उत्सव नहीं मनाया जाता है। यह हरकत नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं, मैंने देखी है, यह पीड़ा महसूस की है। मैं नहीं चाहता कि इस विषय को और आगे बढ़ाया जाए। आज मेरी आपसे पुरजोर प्रार्थना है कि राजनीतिक बहस में जितने हथियार निकालने हैं, निकालिए, पर जहां व्यक्तियों के सम्मान की बात आती है, राजनीतिक व्यक्ति के भी सम्मान की बात आती है, हमको बहुत सेंसिटिव होना चाहिए। डा. केशव, यह बात सदन तक सीमित नहीं है, यह बात करोड़ों लोगों तक जाएगी। ऐसा नहीं होना चाहिए। मैं बहुत ही संयमित होकर, सद्भाव के तरीके से, सदन की प्रतिष्ठा को दृष्टिगत रख कर, विवशपूर्ण वातावरण में आहत दिल से यह बात कह रहा हूँ। मेरा सदन को अनुरोध रहेगा कि हमको अलग से मिल कर, सदन के बाहर मिल कर, बैठ कर इन विषयों पर एकमत होना चाहिए। इस जगह से मैंने किन-किन को सम्मानित नहीं किया! मैं सदस्य के जन्मदिन को सम्मानित करता हूँ; मैं हमारे खिलाड़ियों को सम्मानित करता हूँ; जिनको ऑस्कर अवार्ड मिले, मैं उनको सम्मानित करता हूँ। मैं व्यक्तिगत रूप से ध्यान देता हूँ। जब मुझे पता लगा कि तीन महानुभावों को भारत रत्न दिया गया है, तो बिना समय गँवाए हुए, मुझे पता था कि कुछ लोग टिप्पणी कर सकते हैं कि इस आसन पर बैठ कर आप प्रधान मंत्री का ट्वीट पढ़ रहे हैं, तो मुझे लगा कि सभापति के रूप में मुझे यह जानकारी सदन से शेयर करनी चाहिए, क्योंकि सदन का हर सदस्य यह महसूस करेगा कि पूर्व प्रधान मंत्री, नरसिम्हा राव जी को भारत रत्न मिला है, डा. स्वामीनाथन को भारत रत्न मिला है, चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न मिला है। अब क्या गुजरी होगी उस परिवार पर, क्या गुजरी होगी किसानों पर, गरीब पर, मजदूर पर, गाँव के अंदर कि जयंत चौधरी को बोलने नहीं दिया गया! उनके साथ अभद्र व्यवहार किया गया, अमानवीय तरीके से किया गया, इशारों से किया गया। मैंने यह आँखों से देखा है। मैं बहुत दुखी हूँ। And I am sure you will appreciate it. We must, in one voice, condemn it. व्यक्तिगत रूप से मैं इसकी इतनी भर्त्सना करता हूँ कि मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं आपसे भी अनुरोध करूँगा कि चिंतन कीजिए, मंथन कीजिए कि इस सदन की गिरावट की हद तक आ गए हैं हम, अब हम इसको और न गिरने दें। मान कर चलिए, इसका बहुत व्यापक असर होगा। खुशी का असर कम होता है, दुख बहुत लंबे समय तक पीड़ा देता है। आज के दिन क्या आवश्यकता थी! दो मिनट बोल लेते, बात खत्म थी। मुझे लिखित पढ़ना पड़ा, तो मुझे कहा जाता है कि पहले क्यों नहीं बताया। नियमों को देखेंगे नहीं; मेरे आचरण को, जो मैंने कई सप्ताहों से किया, दृष्टिगत नहीं रखेंगे और अचानक टीका-टिप्पणी करेंगे! मैं खरगे जी का बहुत आदर करता हूँ। उनका इतना लंबा राजनीतिक जीवन है, सादगी भरा जीवन है, पर मैं खून के घूँट पीता रहता हूँ कि वे आसन की गरिमा का ध्यान नहीं रखते। मैं इस चीज को हमेशा दूसरी दृष्टि से देखता हूँ, पर इसकी भी एक हद है। मैं इस आसन पर बैठा हूँ। जगदीप धनखड़ के साथ कुछ भी कीजिए, आपका विवेक है, लेकिन आसन को चुनौती देना, जोर से बोल कर चुनौती देना, यह किसी को भी शोभा नहीं देता, खास तौर से प्रतिपक्ष के नेता को। मैं हाथ जोड़ कर यह शब्द कहने के लिए आप सबसे माफी माँगता हूँ कि इस सदन की इस गिरावट पर मैं कोई अंकुश नहीं लगा पाया। ...(**व्यवधान**)... नहीं, कुछ नहीं। प्लीज़। ...(**व्यवधान**)...